2.4.5 संस्थान ने युवा संकाय सदस्यों को विद्वान गुरुओं के अधीन शास्त्र सीखने में सक्षम बनाने के लिए एक तंत्र तैयार किया है। उन गुरुओं के नाम निर्दिष्ट करें जिनसे शिक्षकों/संकाय सदस्यों ने शास्त्रों/वेद शाखाओं का अध्ययन किया है।

Institution has devised a mechanism to enable the young faculty to learn shastras under learned Gurus. Specify the names of Gurus from whom the teachers/ faculty members have studied Shastras/Veda Shakhas.

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने युवा संकाय सदस्यों को विद्वान गुरुओं के अधीन शास्त्र सीखने में सक्षम बनाने के लिए एक तंत्र तैयार किया है जिसके तहत इस विश्वविद्यालय के युवा शिक्षक के सान्निध्य में इच्छानुसार ग्रंन्थो को पढ सकते हैं और किसी भी अवसर पर उठने वाले किसी भी प्रश्न का उत्तर प्राप्त कर सकते है। यहां के वरिष्ठ शिक्षकों की विशेषता यह है कि वे युवा शिक्षकों अपने पुत्र की तरह समझकर उन्हें पूरी निष्ठा से पढाते है और उनकी शंकाओं को दूर कर सकते हैं।

यहाँ युवा शिक्षक गुरु के सान्निध्य में उनके आवास पर जाकर भी पारंपरिक ग्रन्थों का अध्ययन करते है। इस प्रकार गुरु और शिष्य दोनों एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करके अपने जीवन को उन्नति के पथ पर अग्रसर करते हैं।

इस विश्वविद्यालय का प्रत्येक विभाग समय-समय पर शास्त्रीय व्याख्यान माला नामक एक परियोजना संचालित करता है और सम्बन्धित क्षेत्रों में विश्वप्रसिद्ध विद्वानों के व्याख्यान आयोजित करता है। इन विद्वानों के व्याख्यान कार्यक्रम की रूपरेखा संकाय प्रमुख द्वारा विभागाध्यक्ष एवं विभाग के शिक्षकों के साथ मिलकर तैयार की जाती है। उस समय इस बात पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है कि दूर-दूर से आमन्त्रित विद्वानों को आने-जाने में अथवा इस विश्वविद्यालय में कोई कठिनाई न हो। उनके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों का लाभ

यह होता है कि विभागों में युवा शिक्षकों और शोधछात्रों को सीखने के लिए बहुत कुछ प्राप्त है। वे नियत प्रश्नोत्तरी काल में समागत विद्वानों के सामने अपने प्रश्न भी पूछ सकते हैं और उनका समाधान प्राप्त कर सकते हैं। विश्वविद्यालय समय-समय पर शास्त्रीय बैठकें भी आयोजित करता है। वहाँ शास्त्रार्थ सभा में वरिष्ठ शिक्षकों की उपस्थिति में युवा शिक्षकों को भी कई दायित्व प्रदान किए जाते हैं। ताकि वे विभिन्न अनुभवात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस शास्त्रचर्चा बैठक में युवा शिक्षक भी संयोजक के रूप में अपना दायित्व निभाते हैं। एक महीने में वरिष्ठ शिक्षक समन्वयक और कनिष्ठ सह-समन्वयक होता है और इस प्रकार अगले महीने में अन्य दो वरिष्ठ शिक्षक क्रमशः समन्वयक और सह-समन्वयक होते हैं। इस परम्परा से शिक्षक धीरे-धीरे युवा शिक्षक भी इस विधा क्षेत्र में पारंगत हो जाते हैं।

इसी प्रकार विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए आवश्यकतानुसार कार्यशालाएँ भी आयोजित करता है। उस कार्यशाला में प्रसिद्ध विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है। यहाँ भी शास्त्रार्थ सभी की तरह ही वरिष्ठ शिक्षकों की उपस्थिति में युवा शिक्षकों को संयोजक व अन्य दायित्व दिए जाते हैं और उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है।

विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान भी आनलाइन माध्यम से आयोजित करता है। यह विशिष्ट व्याख्यान साप्ताहिक निर्धारित है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति जी ही करते हैं। कार्यक्रम का आयोजन इस विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. कुप्पा बिल्वेश शर्मा जी के संयोजन में होता है। यह कार्यक्रम गूगल मीट और जूम जैसे उपकरणों के माध्यम से साप्ताहिक रूप से आयोजित किया जाता है।

इस विश्वविद्यालय में न केवल यह प्रथा है कि युवा शिक्षक वरिष्ठ शिक्षकों से अध्ययन करते हैं, बल्कि युवा शिक्षकों से शोध छात्र भी अध्ययन करते हैं। युवा शिक्षकों

द्वारा पढाई गई सामग्री को शोध छात्रों द्वारा अपने शोधप्रबन्ध में प्रयोग किया जाता है। विश्वविद्यालय में यह प्रक्रिया न केवल किसी विशेष विभाग में है, बल्कि इस विश्वविद्यालय के सभी संकायों में और विश्वविद्यालय के सभी विभिन्न विभागों में निर्धारित है।

इस विश्वविद्यालय में जिस तरह वरिष्ठ शिक्षक यूएनओ के शिक्षकों को पढाते हैं और युवा शिक्षक शोध छात्रों को पढाते हैं, उसी तरह शोध छात्र भी इस विश्वविद्यालय के युवा छात्रों को पढाते हैं। इससे शोध छात्रों को भी लाभ होता है। इस प्रकार शुरु किया गया यह क्रम सभी के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी है। यहाँ कुछ युवा शिक्षकों के नाम दिए गए हैं, जो वर्तमान में वरिष्ठ शिक्षकों के साथ पढ रहे हैं या पढ चुके हैं।

›eâce mebKÙee	DeOÙeehekeâ:	iegjesvee&ce	MeeŒeced
1.	[e@. ogiexMe hee"keâ:	Øees. jepejece Megkeäue:, keâeMeer efnvot efJeÕeefJeÅeeueÙe:, JeejeCemeer, kegâueheefleÛej: - meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer	vÙeeÙe:
2.	[e@. kegâhhee efyeuJesMe:	[e@. Deej. ceefCeõeefJe[:, ceõemed mebm›eâefd]heâle keâueeMeeuee, cewueehetj, ÛesVew	DeÉwleJesoevle:
3.	[e@. melÙesvõ kegâceej:	Øees. censvõ heeC[sÙe, meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer	Jeso:
4.	[e@. jepee hee"keâ:	Øees. veeiesvõ heeC[sÙe: mesJeeefveJe=òe:, meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer	pÙeesefle<eced

5.	[e@. jepesMe kegâceej ßeerJeemleJe:	Øees. jcesMe Øemeeo:, meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemee	Heeefue
6.	[e@. efoJÙe Ûesleve yeÇÿeÛeejer	DeeÛeeÙe& heg®<eesòece ef$ehee"er Goemeerve meb. ceneefJeÅeeueÙe, ceerjleeš	JÙeekeâjCeced
7.	ßeer efveefleve DeeÙe&:	[e@. jefJeMe¿j heeC[sÙe:, meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer	JÙeekeâjCeced
8.	[e@. ceOegmetove efceße	Øees. jecepeerJeve efceße pÙeesefle<e efJeYeeie, keâe.efn.efJe.efJe., JeejeCemeer	pÙeesefle<eced
9.	[e@. kegâÃeefyenejer efÉJesoer	1. Øees. JeefMe‰ ef$ehee"er meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer 2. Øees. jepeejece Megkeäue keâe.efn.efJe.efJe., JeejeCemeer	vÙeeÙe
10.	[e@. %eevesvõ meehekeâesše	DeeÛeeÙe& heg®<eesòece ef$ehee"er Goemeerve mebmke=âle ceneefJeÅeeueÙe ceerjleeš	JÙeekeâjCe
11.	[e@. efyepesvõ kegâceej DeeÙe&	DeeÛeeÙe& jeceosJe MeeŒeer peer cenef<e& oÙeevevo GheosMekeâ ceneefJeÅeeueÙe šbkeâeje, iegpejele	JÙeekeâjCe
12.	[e@. efJepeÙe kegâceej Mecee&	Øees. Ùegieue efkeâMeesj efceße	Jeso

		meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer	
13.	[e@. ceOegmetove efleJeejer	Øees. Deefcele kegâceej Megkeäue meb.meb.efJe.efJe., JeejeCemeer	pÙeesefle<eced

इस प्रकार विश्वविद्यालय में यह ऐसी परम्परा व्यवस्थापित की गई है, जिसके माध्यम से वरिष्ठ आचार्य, कनिष्ठ अध्यापक, शोध-छात्र तथा विश्वविद्यालय के सभी छात्र लाभान्वित हो रहे हैं।